

سُورَةُ مَرْيَمَ

Surah 19 — Maryam (Mary) · Meccan · 98 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ كَهَيْعَتَ

काफ़ हा या ऐन साद

2

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكْرِیَّا

ये तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी का जिक्र है जो (उसने) अपने खास बन्दे ज़करिया के साथ की थी

3

إِذْ نَادَى رَبَّهُ ۖ نِدَاءً خَفِيًّا

कि जब ज़करिया ने अपने परवरदिगार को धीमी आवाज़ से पुकारा

4

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا ۖ وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا

(और) अर्ज़ की ऐ मेरे पालने वाले मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई और सर है कि बुढ़ापे की (आग से) भड़क उठा (सेफ़द हो गया) है और ऐ मेरे पालने वाले मैं तेरी बारगाह में दुआ कर के कभी महरूम नहीं रहा हूँ

5

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوْلَىٰ مِنْ وَرَآءِی وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا ۖ فَهَبْ لِي مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا

और मैं अपने (मरने के) बाद अपने वारिसों से सहम जाता हूँ (कि मुबादा दीन को बरबाद करें) और मेरी बीबी उम्मे कुलसूम बिनते इमरान बांझ है पस तू मुझको अपनी बारगाह से एक ज़ाँनशीन फरज़न्द अता फ़रमा

6

يَرْثُنِي وَيَرْثُ مِنِّیْ عَالٍ يَعْقُوبَ ۖ وَأَجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا

जो मेरी और याकूब की नस्ल की मीरास का मालिक हो ऐ मेरे परवरदिगार और उसको अपना पसन्दीदा बन्दा बना

7

يُزَكِّرِيَا إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلْمٍ أَسمُهُ ۚ يَحْيَى لَمْ نَجْعَلْ لَهُ ۙ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۚ

खुदा ने फरमाया हम तुमको एक लड़के की खुशखबरी देते हैं जिसका नाम यहया होगा और हमने उससे पहले किसी को उसका हमनाम नहीं पैदा किया

8

قَالَ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلْمٌ ۚ وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا ۚ وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۚ

ज़करिया ने अर्ज़ की या इलाही (भला) मुझे लड़का क्योंकर होगा और हालत ये है कि मेरी बीवी बाँझ है और मैं खुद हद से ज्यादा बुढ़ापे को पहुँच गया हूँ

9

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ هَيْنٍ ۚ وَقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ۚ

(खुदा ने) फ़रमाया ऐसा ही होगा तुम्हारा परवरदिगार फ़रमाता है कि ये बात हम पर (कुछ दुशवार नहीं) आसान है और (तुम अपने को तो ख्याल करो कि) इससे पहले तुमको पैदा किया हालाँकि तुम कुछ भी न थे

10

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ۚ قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَ لَيَالٍ ۚ سَوِيًّا ۚ

ज़करिया ने अर्ज़ की इलाही मेरे लिए कोई अलामत मुक़र्रर कर दें हुक्म हुआ तुम्हारी पहचान ये है कि तुम तीन रात (दिन) बराबर लोगों से बात नहीं कर सकोगे

11

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ مِنَ الْمِحْرَابِ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ أَنْ سَبِّحُوا ۚ بُكْرَةً ۚ وَعَشِيًّا ۚ

फिर ज़करिया (अपने इबादत के) हुजरे से अपनी क़ौम के पास (हिदायत देने के लिए) निकले तो उन से इशारा किया कि तुम लोग सुबह व शाम बराबर उसकी तसबीह (व तक्रदीस) किया करो

12

يَحْيَىٰ خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ ۚ وَءَاتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۚ

(ज़ज़ यहया पैदा हुए और हमने उनसे कहा) ऐ यहया किताब (तौरैत) मज़बूती के साथ लो

13

وَحَنَانًا ۚ مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكَاةً ۚ وَكَانَ تَقِيًّا ۚ

और हमने उन्हें बचपन ही में अपनी बारगाह से नुबूत और रहमदिली और पाक़ीज़गी अता फरमाई

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ هَيْنٍ ۖ ۚ وَلِنَجْعَلَهُ ۖ ءَايَةً ۖ لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً ۖ مِنَّا ۖ ۚ
وَكَانَ أَمْرًا ۖ ۚ مَّقْضِيًّا ۖ ۚ

जिबरील ने कहा तुमने कहा ठीक (मगर) तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रमाया है कि ये बात (बे बाप के लड़का पैदा करना) मुझ पर आसान है ताकि इसको (पैदा करके) लोगों के वास्ते (अपनी कुदरत की) निशानी करार दें और अपनी खास रहमत का ज़रिया बनायें

ۚ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ ۖ ۚ مَكَانًا ۖ ۚ قَصِيًّا ۖ ۚ

और ये बात फैसला शुदा है गरज़ लड़के के साथ वह आप ही आप हमेला हो गई फिर इसकी वजह से लोगों से अलग एक दूर के मकान में चली गई

فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَلَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا ۖ ۚ
مَنْسِيًّا ۖ ۚ

फिर (जब जनने का वक्त ़क़रीब आया तो दरदे ज़ह) उन्हें एक खजूर के (सूखे) दरख्त की जड़ में ले आया और (बेकसी में शर्म से) कहने लगीं काश मैं इससे पहले मर जाती और (न पैद होकर)

فَنَادَاهَا مِن تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۖ ۚ

बिल्कुल भूली बिसरी हो जाती तब जिबरील ने मरियम के पाईन की तरफ़ से आवाज़ दी कि तुम कुढ़ों नहीं देखो तो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे क़रीब ही नीचे एक चश्मा जारी कर दिया है

وَهُزِّي إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسْقِطُ عَلَيْكَ رَطْبًا ۖ ۚ جَنِيًّا ۖ ۚ

और खुरमे की जड़ (पकड़ कर) अपनी तरफ़ हिलाओ तुम पर पक्के-पक्के ताजे खुरमे झड़ पड़ेंगे फिर (शौक़ से खुरमे) खाओ

فَكُلِي وَأَشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا ۖ ۚ فَإِمَّا تَرِينِ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا ۖ ۚ فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ
لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا ۖ ۚ فَلَنْ أَكَلِمَ الْيَوْمَ أَنْسِيًّا ۖ ۚ

और (चश्मे का पानी) पियो और (लड़के से) अपनी आँख ठन्डी करो फिर अगर तुम किसी आदमी को देखो (और वह तुमसे कुछ पूछे) तो तुम इशारे से कह देना कि मैंने खुदा के वास्ते रोजे की नज़र की थी तो मैं आज हरगिज़ किसी से बात नहीं कर सकती

27

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۚ قَالُوا ۚ يَمْرِئٌ لَّكَدْ جِئْتَ شَيْئًا ۚ فَرِيًّا ۚ

फिर मरियम उस लड़के को अपनी गोद में लिए हुए अपनी क्रौम के पास आयीं वह लोग देखकर कहने लगे ऐ मरियम तुमने तो यकीनन बहुत बुरा काम किया

28

يَأْخُذَ هُرُونَ مَا كَانَ أَبُوكَ أَمْرًا سَوَاءً ۚ وَمَا كَانَتْ أُمُّكَ بَغِيًّا ۚ

ऐ हारून की बहन न तो तेरा बाप ही बुरा आदमी था और न तो तेरी माँ ही बदकार थी (ये तूने क्या किया)

29

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ۚ قَالُوا ۚ كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْأَمْهِدِ صَبِيًّا ۚ

तो मरियम ने उस लड़के की तरफ इशारा किया (कि जो कुछ पूछना है इससे पूछ लो) और वह लोग बोले भला हम गोद के बच्चे से क्योंकर बात करें

30

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ءَاتَنِي الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۚ

(इस पर वह बच्चा कुदरते खुदा से) बोल उठा कि मैं बेशक खुदा का बन्दा हूँ मुझ को उसी ने किताब (इन्जील) अता फरमाई है और मुझ को नबी बनाया

31

وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَنِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۚ

और मैं (चाहे) कहीं रहूँ मुझ को मुबारक बनाया और मुझ को जब तक ज़िन्दा रहूँ नमाज़ पढ़ने ज़कात देने की ताकीद की है और मुझ को अपनी वालेदा का फ़रमाबरदार बनाया

32

وَيَرًّا ۚ اِبُولَدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا ۚ شَقِيًّا ۚ

और (अलहमदोलिल्लाह कि) मुझको सरकश नाफरमान नहीं बनाया

33

وَالسَّلَامُ عَلَى يَوْمٍ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۚ

और (खुदा की तरफ़ से) जिस दिन मैं पैदा हुआ हूँ और जिस दिन मरूँगा मुझ पर सलाम है और जिस दिन (दोबारा) ज़िन्दा उठा कर खड़ा किया जाऊँगा

ذَلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۖ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ

ये है कि मरियम के बेटे ईसा का सच्चा (सच्चा) क्रिस्सा जिसमें ये लोग (स्वाहमस्वाह) शक किया करते हैं

مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ ۚ سُبْحَنَهُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا ۖ فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ ۖ كُنْ فَيَكُونُ

खुदा कि लिए ये किसी तरह सज़ावार नहीं कि वह (किसी को) बेटा बनाए वह पाक व पकीज़ा है जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसको कह देता है कि "हो जा" तो वह हो जाता है

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَأَعْبُدُوهُ ۖ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ

और इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा (ही) मेरा (भी) परवरदिगार है और तुम्हारा (भी) परवरदिगार है तो सब के सब उसी की इबादत करो यही (तौहीद) सीधा रास्ता है

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْ مَّشْهَدٍ يَوْمٍ عَظِيمٍ

(और यही दिन ईसा लेकर आए थे) फिर (काफिरों के) फिरकों ने बहम एखतेलाफ किया तो जिन लोगों ने कुफ्र इस्तियार किया उनके लिए बड़े (सख्त दिन खुदा के हुज़ूर) हाज़िर होने से खराबी है

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا ۖ لَكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ

जिस दिन ये लोग हमारे हुज़ूर में हाज़िर होंगे क्या कुछ सुनते देखते होंगे मगर आज तो नफ़रमान लोग खुल्लम खुल्ला गुमराही में हैं

وَأَنْذَرَهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ ۚ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

और (ऐ रसूल) तुम उनको हसरत (अफ़सोस) के दिन से डराओ जब क़तई फैसला कर दिया जाएगा और (इस वक्त तो) ये लोग ग़फलत में (पड़े हैं)

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ

और ईमान नहीं लाते इसमें शक नहीं कि (एक दिन) ज़मीन के और जो कुछ उस पर है (उसके) हम ही वारिस होंगे

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا ۖ نَبِيًّا

(और सब नेस्त व नाबूद हो जाएँगे) और सब के सब हमारी तरफ़ लौटाए जाएँगे और (ऐ रसूल) कुरान में इबराहीम का (भी) तज़क़िरा करो

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَأْبَتُ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْءٌ ۖ

इसमें शक नहीं कि वह बड़े सच्चे नबी थे जब उन्होंने अपने चचा और मुँह बोले बाप से कहा कि ऐ अब्बा आप क्यों, ऐसी चीज़ (बुत) की परसतिश करते हैं जो ने सुन सकता है और न देख सकता है

يَأْبَتُ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا ۖ سَوِيًّا ۖ

और न कुछ आपके काम ही आ सकता है ऐ मेरे अब्बा यक़ीनन मेरे पास वह इल्म आ चुका है जो आपके पास नहीं आया तो आप मेरी पैरवी कीजिए मैं आपको (दीन की) सीधी राह दिखा दूँगा

يَأْبَتُ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ۖ

ऐ अब्बा आप शैतान की परसतिश न कीजिए (क्योंकि) शैतान यक़ीनन खुदा का नाफ़रमान (बन्दा) है।

يَأْبَتُ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ ۖ مِنَ الرَّحْمَنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ۖ

ऐ अब्बा मैं यक़ीनन इससे डरता हूँ कि (मुबादा) खुदा की तरफ़ से आप पर कोई अज़ाब नाज़िल हो तो (आख़िर) आप शैतान के साथी बन जाईए

قَالَ أَرَأَيْتَ أَنْتَ عَنْ ءَالِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ ۖ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ ۖ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ۖ

(आज़र ने) कहा (क्यों) इबराहीम क्या तू मेरे माबूदों को नहीं मानता है अगर तू (इन बातों से) किसी तरह बाज़ न आएगा तो (याद रहे) मैं तुझे संगसार कर दूँगा और तू मेरे पास से हमेशा के लिए दूर हो जा

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۖ إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ۖ

इबराहीम ने कहा (अच्छा तो) मेरा सलाम लीजिए (मगर इस पर भी) मैं अपने परवरदिगार से आपकी बख़्शिश की दुआ करूँगा

وَأَعْتَزُّكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُوا ۚ رَبِّي عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ۚ

(क्योंकि) बेशक वह मुझ पर बड़ा मेहरबान है और मैंने आप को (भी) और इन बुतों को (भी) जिन्हें आप लोग खुदा को छोड़कर पूजा करते हैं (सबको) छोड़ा और अपने परवरदिगार ही की इबादत करूँगा उम्मीद है कि मैं अपने परवरदिगार की इबादत से महरूम न रहूँगा

فَلَمَّا أُعْزِلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ ۚ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۚ

गराज इबराहीम ने उन लोगों को और जिसे ये लोग खुदा को छोड़कर परसतिश किया करते थे छोड़ा तो हमने उन्हें इसहाक व याकूब (सी औलाद) अता फ़रमाई और हर एक को नुबूवत के दर्जे पर फ़ायज़ किया

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۚ

और उन सबको अपनी रहमत से कुछ इनायत फ़रमाया और हमने उनके लिए आला दर्जे का ज़िक्र ख़ैर (दुनिया में भी) करार दिया

وَأَنذَرُ فِي الْكِتَابِ مُوسَىٰ ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ مُخْلَصًا ۚ وَكَانَ رَسُولًا ۚ نَّبِيًّا ۚ

और (ऐ रसूल) कुरान में (कुछ) मूसा का (भी) तज़क़िरा करो इसमें शक नहीं कि वह (मेरा) बन्दा और साहिबे किताब व शरीयत नबी था

وَنَدَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ۚ

और हमने उनको (कोहे तूर) की दाहिनी तरफ़ से आवाज़ दी और हमने उन्हें राज़ व नियाज़ की बातें करने के लिए अपने करीब बुलाया

وَوَهَبْنَا لَهُ ۚ مِنْ رَّحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ۚ

और हमने उन्हें अपनी खास मेहरबानी से उनके भाई हारून को (उनका वज़ीर बनाकर) इनायत फ़रमाया

54

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ ۚ إِنَّهُ ۙ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ۚ

(ऐ रसूल) कुरान में इसमाईल का (भी) तज़क़िरा करो इसमें शक नहीं कि वह वायदे के सच्चे थे और भेजे हुए पैग़म्बर थे

55

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ ۚ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ مَرْضِيًّا ۚ

और अपने घर के लोगों को नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने की ताकीद किया करते थे और अपने परवरदिगार की बारगाह में पसन्दीदा थे

56

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ ۚ إِنَّهُ ۙ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا ۚ

और (ऐ रसूल) कुरान में इदरीस का भी तज़क़िरा करो इसमें शक नहीं कि वह बड़े सच्चे (बन्दे और) नबी थे

57

وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا

और हमने उनको बहुत ऊँची जगह (बेहिश्त में) बुलन्द कर (के पहुँचा) दिया

58

أَوْ لَكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ ۖ مِنْ ذُرِّيَةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَءِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ۚ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَنِ خَرُّوا سُجَّدًا ۚ وَبُكِيًّا ۚ

ये अम्बिया लोग जिन्हें खुदा ने अपनी नेअमत दी आदमी की औलाद से हैं और उनकी नस्ल से जिन्हें हमने (तूफ़ान के वक्त) नूह के साथ (कशती पर) सवारकर लिया था और इबराहीम व याकूब की औलाद से हैं और उन लोगों में से हैं जिनकी हमने हिदायत की और मुन्तिख़ब किया जब उनके सामने खुदा की (नाज़िल की हुई) आयतें पढ़ी जाती थीं तो सजदे में ज़ारोक्रतार रोते हुए गिर पड़ते थे (58) सजदा

59

ۚ فَخَلَفَ مِنْ ۚ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا ۚ الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا ۚ الشَّهْوَاتِ ۚ فَسَوْفَ

يَلْقَوْنَ غِيًّا

फिर उनके बाद कुछ नाख़लफ़ (उनके) जानशीन हुए जिन्होंने नमाज़ें खोयी और नफ़सानी ख्वाहिशों के चले बन बैठे अनक़रीब ही ये लोग (अपनी) गुमराही (के ख़ामयाजे) से जा मिलेंगे

60

إِلَّا مَنْ تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۖ

मगर (हाँ) जिसने तौबा कर लिया और अच्छे-अच्छे काम किए तो ऐसे लोग बेहिश्त में दाखिल होंगे और उन पर कुछ भी जुल्म नहीं किया जाएगा वह सदाबहार बाग़ात में रहेंगे

61

جَنَّتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ ۖ بِالْغَيْبِ ۖ إِنَّهُ ۖ كَانَ وَعْدُهُ ۖ مَأْتِيًّا ۖ

जिनका खुदा ने अपने बन्दों से गाएबाना वायदा कर लिया है बेशक उसका वायदा पूरा होने वाला है

62

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا ۖ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً ۖ وَعَشِيًّا ۖ

वह लोग वहाँ सलाम के सिवा कोई बेहूदा बात सुनेंगे ही नहीं मगर हर तरफ से इस्लाम ही इस्लाम (की आवाज़ आएगी) और वहाँ उनका खाना सुबह व शाम (जिस वक्त चाहेंगे) उनके लिए (तैयार) रहेगा

63

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۖ

यही वह बिहश्त है कि हमारे बन्दों में से जो परहेज़गार होगा हम उसे उसका वारिस बनायेगे

64

وَمَا نَنْزِلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ ۖ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ ۖ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۖ

और (ऐ रसूल) हम लोग फ़रिश्ते आप के परवरदिगार के हुक्म के बग़ैर (दुनिया में) नहीं नाज़िल होते जो कुछ हमारे सामने है और जो कुछ हमारे पीठ पीछे है और जो कुछ उनके दरमियान में है (गरज़ सबकुछ) उसी का है

65

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۖ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ ۖ سَمِيًّا ۖ

और तुम्हारा परवरदिगार कुछ भूलने वाला नहीं है सारे आसमान और ज़मीन का मालिक है और उन चीज़ों का भी जो दोनों के दरमियान में है तो तुम उसकी इबादत करो (और उसकी इबादत पर साबित) क़दम रहो भला तुम्हारे इल्म में उसका कोई हमनाम भी है

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَاتَ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا

और (बाज़) आदमी अबी बिन ख़लफ़ ताज्जुब से कहा करते हैं कि क्या जब मैं मर जाऊँगा तो जल्दी ही जीता जागता (क़ब्र से) निकाला जाऊँगा

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا

क्या वह (आदमी) उसको नहीं याद करता कि उसको इससे पहले जब वह कुछ भी न था पैदा किया था

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا

तो वह (ऐ रसूल) तुम्हारे परवरदिगार की (अपनी) किस्म हम उनको और शैतान को इकट्ठा करेंगे फिर उन सब को जहन्नुम के गिर्दागिर्द घुटनों के बल हाज़िर करेंगे

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَنِ عِتِيًّا

फिर हर गिरोह में से ऐसे लोगों को अलग निकाल लेंगे (जो दुनिया में) खुदा से औरों की निस्बत अकड़े-अकड़े फिरते थे

ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا

फिर जो लोग जहन्नुम में झोंके जाएँगे ज्यादा सज़ावार हैं हम उनसे खूब वाक़िफ़ हैं

وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا ۚ مَقْضِيًّا

और तुममे से कोई ऐसा नहीं जो जहन्नुम पर से होकर न गुज़रे (क्योंकि पुल सिरात उसी पर है) ये तुम्हारे परवरदिगार पर हेतेमी और लाज़मी (वायदा) है

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا ۚ وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا

फिर हम परहेज़गारों को बचाएँगे और नाफ़रमानों को घुटने के भल उसमें छोड़ देंगे

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۚ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ ۚ مَّقَامٌ ۚ وَأَحْسَنُ نَدِيٍّ ۚ

और जब हमारी वाज़ेए रौशन आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया ईमानवालों से पूछते हैं भला ये तो बताओ कि हम तुम दोनों फरीक़ों में से मरतबे में कौन ज्यादा बेहतर है और किसकी महफिल ज्यादा अच्छी है

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثْنًا ۚ وَرِئِي ۚ

हालाँकि हमने उनसे पहले बहुत सी जमाअतों को हलाक कर छोड़ा जो उनसे साज़ो सामान और ज़ाहिरी नमूद में कहीं बढ़ चढ़ के थी

قُلْ مَن كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَنُ مَدًّا ۚ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا ۚ مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ ۚ مَّكَانًا ۚ وَأَضْعَفُ جُنْدًا ۚ

(ऐ रसूल) कह दो कि जो शख्स गुमराही में पड़ा है तो खुदा उसको ढील ही देता चला जाता है यहाँ तक कि उस चीज़ को (अपनी आँखों से) देख लेंगे जिनका उनसे वायदा किया गया है या अज़ाब या क़यामत तो उस वक़्त उन्हें मालूम हो जाएगा कि मरतबे में कौन बदतर है और लश्कर (जत्थे) में कौन कमज़ोर है (बेकस) है

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا ۚ هُدًى ۚ وَالْبَاقِيَتُ الصَّالِحَتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا ۚ وَخَيْرٌ ۚ مَّرَدًّا ۚ

और जो लोग राहे रास्त पर हैं खुदा उनकी हिदायत और ज्यादा करता जाता है और बाक़ी रह जाने वाली नेकियाँ तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक सवाब की राह से भी बेहतर है और अन्जाम के ऐतबार से (भी) बेहतर है

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتِيَنَّ مَالًا ۚ وَوَلَدًا

(ऐ रसूल) क्या तुमने उस शख्स पर भी नज़र की जिसने हमारी आयतों से इन्कार किया और कहने लगा कि (अगर क़यामत हुई तो भी) मुझे माल और औलाद ज़रूर मिलेगी

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۚ

क्या उसे ग़ैब का हाल मालूम हो गया है या उसने खुदा से कोई अहद (व पैमान) ले रखा है हरग़िज नहीं

كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ ۚ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۚ۱

जो कुछ ये बकता है (सब) हम सभी से लिखे लेते हैं और उसके लिए और ज्यादा अज़ाब बढ़ाते हैं

وَنَرِثُهُ ۚ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۚ۱

और वो माल व औलाद की निस्वत बक रहा है हम ही उसके मालिक हो बैठेंगे और ये हमारे पास तनहा आयेगा

وَاتَّخَذُوا ۚ مِنَ دُونِ اللَّهِ ءَالِهَةً ۚ لِّيَكُونُوا ۚ لَهُمْ عِزٌّ ۚ۱

और उन लोगों ने खुदा को छोड़कर दूसरे-दूसरे माबूद बना रखे हैं ताकि वह उनकी इज्जत के बाएँ हों हरगिज़ नहीं

كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۚ۱

(बल्कि) वह माबूद खुद उनकी इबादत से इन्कार करेंगे और (उल्टे) उनके दुश्मन हो जाएँगे

أَلَمْ تَرَ أَنَا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤْزُهُمْ أَزًّا ۚ۱

(ऐ रसूल) क्या तुमने इसी बात को नहीं देखा कि हमने शैतान को काफ़ि़रों पर छोड़ रखा है कि वह उन्हें बहकाते रहते हैं

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ۚ۱

तो (ऐ रसूल) तुम उन काफ़ि़रों पर (नुज़ूले अज़ाब की) जल्दी न करो हम तो बस उनके लिए (अज़ाब) का दिन गिन रहे हैं

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ۚ۱

कि जिस दिन परहेज़गारों को (खुदाएँ) रहमान के (अपने) सामने मेहमानों की तरह तरह जमा करेंगे

وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وَرِدًّا ۚ۱

और गुनेहगारों को जहन्नुम की तरफ प्यासे (जानवरों की तरह हकाँएंगे)

87

لَا يَمْلِكُونَ الشَّفْعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۚ۝۱

(उस दिन) ये लोग सिफारिश पर भी क़ादिर न होंगे मगर (वहाँ) जिस शख्स ने खुदा से (सिफारिश का) एकरा ले लिया हो

88

وَقَالُوا ۚ اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۚ۝۱

और (यहूदी) लोग कहते हैं कि खुदा ने (अज़ीज़ को) बेटा बना लिया है

89

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ۚ۝۱

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुमने इतनी बड़ी सख्त बात अपनी तरफ से गढ़ के की है

90

تَكَادُ السَّمُوتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۚ۝۱

कि क़रीब है कि आसमान उससे फट पड़े और ज़मीन शिगाफ़ता हो जाए और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़े

91

أَنْ دَعَوْا ۚ لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ۚ۝۱

इस बात से कि उन लोगों ने खुदा के लिए बेटा करार दिया

92

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۚ۝۱

हालाँकि खुदा के लिए ये किसी तरह शायों ही नहीं कि वह (किसी को अपना) बेटा बना ले

93

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتَى الرَّحْمَنِ عَبْدًا ۚ۝۱

सारे आसमान व ज़मीन में जितनी चीज़ें हैं सब की सब खुदा के सामने बन्दा ही बनकर आने वाली हैं उसने यक़ीनन सबको अपने (इल्म) के अहाते में घेर लिया है

94

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۚ۝۱

और सबको अच्छी तरह गिन लिया है

وَكُلُّهُمْ ءَاتِيهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَرْدًا

और ये सब उसके सामने क़यामत के दिन अकेले (अकेले) हाज़िर होंगे

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ۚ

बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए अनक़रीब ही खुदा उन की मोहब्बत (लोगों के दिलों में) पैदा कर देगा

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ ۚ قَوْمًا ۚ لُدًّا ۚ

(ऐ रसूल) हमने उस कुरान को तुम्हारी (अरबी) जुबान में सिर्फ इसलिए आसान कर दिया है कि तुम उसके ज़रिए से परहेज़गारों को (जन्नत की) खुशख़बरी दो और (अरब की) झगड़ालू क़ौम को (अज़ाबे खुदा से) डराओ

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۚ

और हमने उनसे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर डाला भला तुम उनमें से किसी को (कहीं देखते हो) उसकी कुछ भनक भी सुनते हो